International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 10-10-2025, Accepted: 09-11-2025, Published: 24-11-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 44-47

कामायनी में प्रतीकात्मकता तथा आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि

विशाल प्रताप मित्र
हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, भारत

सारांश
जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' हिंदी साहित्य की एक अद्वितीय दार्शनिक एवं प्रतीकात्मक कृति है जिसमें मानव चेतना के विविध आयामों का गहन मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। यह एक ऐसा महाकाव्य है जो आधुनिक मनुष्य की आत्मयात्रा का रूपक है जहाँ मनु, श्रद्धा और इड़ा जैसे पात्र मानव–मन की जटिल अवस्थाओं का प्रतीक बनकर उभरते हैं। मनु बुद्धि एवं तर्क के प्रतिनिधि हैं तो श्रद्धा भावना और करुणा की प्रतीक है, जबकि इड़ा विज्ञान, ज्ञान और कर्मशीलता की दिशा को उद्घाटित करती है। प्रसाद ने मिथकीय कथा के माध्यम से आधुनिक युग के बौद्धिक–भावनात्मक असंतुलन को व्यक्त किया है। कामायनी में प्रतीक केवल अलंकारिक उपकरण नहीं अपितु आत्मचेतना के बिंब हैं जो मानव के अंतर्मन में चल रहे संघर्ष, पछतावे एवं उससे मुक्ति की प्रक्रिया को उजागर करते हैं। फ्रायड और जुंग के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से समानता रखते हुए प्रसाद का यह काव्य अचेतन मन, स्वप्न के साथ ही भावनात्मक संतुलन की खोज का भी काव्य बन जाता है। उन्होंने दिखाया कि आधुनिकता का संकट केवल बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक है और उसका समाधान मनुष्य के भीतर छिपे प्रेम, करुणा तथा आत्म–ज्ञान में अन्तर्निहित है। इस प्रकार 'कामायनी' आधुनिक मनुष्य के बिखरे हुए व्यक्तित्व को एक समग्र दृष्टि प्रदान करती है जहाँ प्रतीक भाषा बन जाते हैं और कविता आत्मा का दर्पण।

मूल शब्दः कामायनी, प्रतीकवाद, मनोविज्ञान, श्रद्धा, मनु, आधुनिकता, आत्मचेतना

भूमिका
जयशंकर प्रसाद (1889–1937) हिंदी साहित्य के उन विलक्षण रचनाकारों में हैं जिन्होंने काव्य को दार्शनिक गहराई, मनोवैज्ञानिक संवेदना के साथ ही प्रतीकात्मक सौंदर्य से भी समृद्ध किया। उन्होंने कविता को भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ साथ जीवन और चेतना के रहस्यों को उद्घाटित करने का भी माध्यम बनाया। 'कामायनी' (1936) उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है जिसे हिंदी का पहला दार्शनिक–प्रतीकात्मक महाकाव्य कहा जाता है। यह महाकाव्य केवल किसी मिथकीय कथा का पुनरावर्तन मात्र नहीं अपितु मानव सभ्यता की उत्पत्ति से लेकर उसके मानसिक–नैतिक–आध्यात्मिक विकास की यात्रा का प्रतीकात्मक रूपांतरण है। प्रसाद ने इस रचना के माध्यम से यह दिखाया कि मनुष्य का वास्तविक संघर्ष बाहर नहीं अपने भीतर चलता है भावना और तर्क, श्रद्धा और इड़ा, आस्था और संशय के बीच। उनकी दृष्टि में "कला जीवन की आत्मा है, जो सत्य के प्रकाश में सौंदर्य का सृजन करती है" (प्रसाद, 1936) और यही विचार 'कामायनी' में अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है। यह काव्य मानव–मन के भीतर के तूफ़ान और संतुलन की कहानी है जिसमें प्रकृति तथा प्रतीक दोनों मिलकर मनुष्य के मानसिक संसार की परतें खोलते हैं। प्रसाद ने वैदिक आख्यान 'मनु और श्रद्धा' को लेकर आधुनिक युग की मनोवैज्ञानिक समस्या का रूपक रचा। मनु यहाँ बुद्धि और तर्क के प्रतीक हैं जो अपने कर्मों के परिणामस्वरूप मानसिक अशांति एवं ग्लानि का अनुभव करते हैं, जबकि श्रद्धा हृदय की कोमलता, प्रेम और जीवन की निरंतरता का प्रतीक बनती है। इड़ा उस युग की नई चेतना, ज्ञान, कर्मशीलता आदि का प्रतीक है जो जीवन को गतिशील बनाती है। इस प्रकार कामायनी का प्रत्येक पात्र, प्रत्येक प्रसंग एवं प्रत्येक प्राकृतिक दृश्य मनुष्य की किसी मनोवैज्ञानिक अवस्था का द्योतक बन जाता है। प्रसाद का युग औपनिवेशिक संक्रमण का युग था जहाँ परंपरा तथा आधुनिकता के संघर्ष के बीच मनुष्य की चेतना नए प्रश्नों से जूझ रही थी। कामायनी इसी संघर्ष का उत्तर प्रस्तुत करती है। इसमें प्रयुक्त प्रतीक और बिंब काव्यात्मक उपकरण होने के साथ ही मानव मन की गहराइयों में उतरने के माध्यम हैं। जल, हिम, पर्वत, बाढ़, अग्नि जैसे तत्व मनुष्य के अंतर्द्वंद्वों का रूपक बन जाते हैं जहाँ जल भावनाओं का, हिम जड़ता का, और अग्नि परिवर्तन का प्रतीक है। कामायनी इस अर्थ में एक दार्शनिक–मनोवैज्ञानिक महाकाव्य है जो जीवन, प्रकृति एवं चेतना की एकात्म दृष्टि को प्रकट करता है। जयशंकर प्रसाद ने इस कृति में यह दिखाया कि साहित्य केवल सौंदर्य साधन होने के साथ आत्म–ज्ञान और मानव–मूल्य की पुनर्स्थापना का माध्यम है। यही कारण है कि कामायनी आज भी आधुनिक मनुष्य की मानसिक बेचैनी, आत्म–खोज, अस्तित्वगत संघर्ष आदि की सर्वाधिक संवेदनशील काव्यात्मक व्याख्या के रूप में स्मरणीय है।

कामायनी की प्रतीकात्मक संरचना
जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' हिंदी काव्य की वह विलक्षण कृति है जिसमें प्रतीक–दर्शन–मनोविज्ञान का अद्भुत संगम दिखाई देता है। यह महाकाव्य अपने भीतर जीवन के समस्त आयामों यथा भावना, तर्क, करुणा, विवेक, संशय और चेतना को एक प्रतीकात्मक संरचना में समाहित करता है। कामायनी को प्रसाद ने मिथकीय कथा के माध्यम से मानव–मन की गूढ़ मनोवैज्ञानिक यात्रा का रूपक बनाया है। यह रचना एक धार्मिक आख्यान का पुनर्लेखन मात्र होने की बजाए उस अंतः संघर्ष की भी कहानी है जो प्रत्येक मनुष्य के भीतर चलता रहता है। कामायनी के प्रत्येक पात्र, प्रसंग एवं बिंब अपने भीतर एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक अर्थ रखते हैं। मनु, श्रद्धा और इड़ा यहाँ केवल पात्र नहीं अपितु मानव–मन के विभिन्न स्तरों का प्रतीक हैं जहाँ मनु बुद्धि, तर्क और आत्मचेतना का प्रतीक हैं; श्रद्धा हृदय, करुणा और भावनात्मक स्थिरता की प्रतीक हैं; तथा इड़ा ज्ञान, कर्म एवं प्रगति की प्रतीक के रूप में प्रकट होती है। इस प्रकार कामायनी की कथा–विन्यास एक साधारण पुराणकथा नहीं, मनुष्य की आत्मिक यात्रा का प्रतीकात्मक रूप है अज्ञान से ज्ञान की ओर, अहं से समरसता की ओर एवं असंतुलन से सामंजस्य की ओर। प्रसाद का प्रतीकवाद अत्यंत सजीव और बहुस्तरीय है। मनु का बाढ़ में बह जाना उस मानसिक विनाश का प्रतीक है जो अहंकार और

तर्क के अत्यधिक प्रबल हो जाने से उत्पन्न होता है। बाढ़ केवल जलप्रलय नहीं अपितु मनुष्य के भीतर की भावनात्मक अराजकता का भी बिंब है। इसी जलप्रलय के बाद श्रद्धा का प्रकट होना करुणा और संवेदना के पुनर्जन्म का प्रतीक है। यहाँ 'जल' शुद्धता तथा जीवन–ऊर्जा का प्रतीक है जो भावनाओं की स्थिरता एवं शांति को दर्शाता है। इसी प्रकार इड़ा का आगमन उस नई चेतना का सूचक है जो मनुष्य को कर्म, विज्ञान और प्रगति की ओर अग्रसर करती है। इस प्रकार कामायनी के तीनों प्रमुख पात्र मनु, श्रद्धा और इड़ा बुद्धि, भावना और कर्म के त्रिकोण को रचते हैं जो मानव जीवन की संपूर्णता का प्रतीक है। प्रकृति–चित्रण कामायनी में केवल सौंदर्य हेतु नहीं बल्कि प्रतीकात्मक उद्देश्य से किया गया है। जल, हिम, अग्नि, नदी, पर्वत, और आकाश आदि जैसे प्राकृतिक बिंब मानव–मन की अवस्थाओं का प्रतीक हैं। हिमालय मनु के भीतर की स्थिरता तथा आत्मसंयम का प्रतीक है जबकि बाढ़ उनके मानसिक विघटन का रूपक है। इसी प्रकार अग्नि ज्ञान एवं तपस्या का प्रतीक बनकर सामने आती है। यहाँ जल और अग्नि दोनों मनुष्य के भीतर के दो विपरीत प्रवृत्तियों का प्रतीक हैं भावना और तर्क, जो एक–दूसरे को नष्ट नहीं करते बल्कि शुद्ध करते हैं। यह प्रतीकात्मकता प्रसाद के साहित्य को बहुआयामी बनाती है। कामायनी की कथा–विन्यास प्रतीकों के माध्यम से आत्मा की यात्रा का चित्रण है। जब मनु 'श्रद्धा' से जुड़ते हैं तो वह प्रेम और संतुलन का अनुभव करते हैं परंतु जब वे 'इड़ा' की ओर मुड़ते हैं, तो बौद्धिकता का अतिरेक उन्हें पुनः अशांति की ओर ले जाता है। यह प्रक्रिया आधुनिक मनुष्य के मनोवैज्ञानिक विकास की यात्रा के समान है जहाँ वह भावनाओं को त्यागकर तर्क की ओर जाता है और फिर पुनः उस रिक्तता से ग्रस्त हो जाता है जो संवेदना के अभाव से उत्पन्न होती है। प्रसाद इस यात्रा को मिथकीय रूप देकर सार्वभौमिक बना देते हैं। इसीलिए कामायनी केवल किसी युग की कथा नहीं अपितु समूची मानवता की मानसिक विकास–गाथा है। प्रसाद की प्रतीकात्मकता में भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों का गहरा प्रभाव है। 'मनु' और 'श्रद्धा' जैसे पात्र वैदिक परंपरा से लिए गए हैं किन्तु उनके अर्थ आधुनिक हैं। 'श्रद्धा' अब धार्मिक आस्था मात्र नहीं जीवन में प्रेम, सहानुभूति तथा आत्म–संतुलन की प्रतीक बन जाती है। वहीं 'इड़ा' का अर्थ केवल वेदज्ञा अथवा कर्मठता नहीं बल्कि विज्ञान एवं विवेक से युक्त आधुनिक मनुष्य की चेतना है। इस हेतु प्रसाद की प्रतीकात्मकता स्थिर नहीं गतिशील है जो समय के साथ अपने अर्थ बदलती है और हर पाठक के मनोभावों के अनुसार नई व्याख्या ग्रहण करती है (Sharma, 1975)। यही उनकी काव्य–दृष्टि की शक्ति है कि वे प्रतीक के माध्यम से मनोविज्ञान को कविता की संवेदना में रूपांतरित कर देते हैं। कामायनी की प्रतीकात्मक संरचना में एक और महत्वपूर्ण तत्व है उसका आध्यात्मिक आयाम। प्रसाद की प्रतीकात्मकता मात्र मनोवैज्ञानिक नहीं आध्यात्मिक भी है। उनके लिए 'मनु' का आत्म–संघर्ष आत्मा के पुनर्जागरण की प्रक्रिया है। यहाँ प्रतीक आत्मा की मुक्ति का साधन है। इस प्रकार, कामायनी की प्रतीकात्मक संरचना सौंदर्य या बौद्धिक विमर्श तक सीमित नहीं रहती बल्कि मानव–मन की गहराई में उतरकर उसकी जटिलता, अस्थिरता, संतुलन की खोज का माध्यम बन जाती है। यह कृति प्रतीकों के माध्यम से यह संदेश देती है कि मनुष्य की वास्तविक यात्रा बाहरी नहीं भीतरी होती है जहाँ उसे अपने अहं, संशय एवं भय को पार कर श्रद्धा, प्रेम और विवेक के समन्वय तक पहुँचना होता है। प्रसाद ने मिथक को मनोविज्ञान और दर्शन के साथ इस तरह जोड़ा कि कामायनी भारतीय काव्य–परंपरा में एक युगांतकारी कृति बन गई। इस दृष्टि से कामायनी एक महाकाव्य मात्र नहीं अपितु मनुष्य के मन की गहराइयों में झाँकने वाला प्रतीकात्मक दर्पण है जिसमें हर युग का मनुष्य अपने अस्तित्व का अर्थ खोज सकता है।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' केवल एक दार्शनिक अथवा प्रतीकात्मक महाकाव्य नहीं है अपितु आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से भी अत्यंत गहन अद्भुत कृति है। इस महाकाव्य में मानव–मन की जटिल संरचना, उसके अचेतन, चेतन तथा अर्धचेतन स्तरों का सजीव चित्रण मिलता है। यह रचना सिग्मंड फ्रायड तथा कार्ल युंग के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से आश्चर्यजनक समानता रखती है खासकर अचेतन मन (unconscious mind), स्वप्न प्रतीक (dream symbols) एवं self-realization जैसी अवधारणाओं से। प्रसाद ने वैदिक आख्यान "मनु और श्रद्धा" के माध्यम से जो कथा रची है वह वस्तुतः मनुष्य के भीतर सतत चलने वाली मानसिक प्रक्रियाओं की रूपकात्मक प्रस्तुति है। मनु का बाढ़ में बह जाना मनुष्य की चेतना में उत्पन्न मानसिक प्रलय का प्रतीक है जहाँ वह अपने कर्म, अहं एवं अपराधबोध से जूझ रहा है। यह वही स्थिति है जिसे फ्रायड 'repression' या दबी हुई भावनाओं का विस्फोट कहते हैं। मनु का यह मानसिक संघर्ष कामायनी की केंद्रीय धुरी है। बाढ़ में बहने के बाद उसका 'श्रद्धा' से मिलना और फिर 'इड़ा' के माध्यम से पुनः बुद्धि की ओर झुकना ये सभी घटनाएँ मनुष्य के मनोवैज्ञानिक विकास की अवस्थाएँ हैं। श्रद्धा का उद्भव भावनात्मक चेतना (emotional self) का प्रतीक है वह प्रेम, करुणा, संवेदना की आत्मा है। इसमें श्रद्धा केवल प्रेम नहीं दे रही बल्कि मनुष्य के मानसिक संतुलन की पुनः स्थापना करती है। यह वह क्षण है जब मनु अपने बिखरे हुए भावों को आत्मसात करने लगता है। आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार यह healing through emotion की अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने दमनित भावों को स्वीकार करता है और पुनः संतुलन प्राप्त करता है। श्रद्धा यहाँ फ्रायड की 'Id' (भावनात्मक प्रेरणा) तथा युंग की "Anima" (स्त्री तत्व) की प्रतीक है जो मनु के अंतर्मन में सुप्त करुणा को जागृत करती है। दूसरी तरफ इड़ा का प्रवेश मानव के rational self का प्रतीक है वह विज्ञान, कर्म और बौद्धिकता का प्रतिनिधित्व करती है। इड़ा की उपस्थिति मनु के भीतर तर्क का जागरण है किन्तु यही जागरण धीरे–धीरे भावनात्मक विछिन्नता का कारण भी बनता है। यह उस आधुनिक मनुष्य की स्थिति का प्रतीक है जो अत्यधिक बौद्धिकता के कारण संवेदना से दूर होता जा रहा है। प्रसाद ने इस मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को अत्यंत गहराई से चित्रित किया है। वे आत्म–विश्लेषण का आह्वान करते हैं, वह आंतरिक यात्रा जिसे आधुनिक मनोविज्ञान self-realization या psychological introspection कहता है। मनु का संघर्ष वस्तुतः आधुनिक मनुष्य का आत्म–संघर्ष है, जहाँ वह भावना और तर्क, आस्था और विज्ञान, प्रेम और बुद्धि के बीच संतुलन साधने की कोशिश करता है। यह द्वंद्व निराला की कविता में सामाजिक रूप में दिखाई देता है पर प्रसाद ने इसे मनोवैज्ञानिक गहराई में रूपांतरित कर दिया। युंग की collective unconscious की अवधारणा का प्रभाव भी कामायनी में स्पष्ट दिखता है। प्रसाद ने मनुष्य के अनुभव को व्यक्तिगत कि बजाए सार्वभौमिक बनाया है। मनु का अपराधबोध तथा उसका आत्मसंघर्ष किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरी मानवता का है। श्रद्धा और इड़ा केवल मनु की मानसिक अवस्थाएँ नहीं, मानव सभ्यता की दो परस्पर पूरक शक्तियाँ हैं भावना और बौद्धिकता। युंग के अनुसार मनुष्य के भीतर इन दोनों तत्वों के असंतुलन से मानसिक विखंडन (neurosis) उत्पन्न होता है। कामायनी इसी असंतुलन को संतुलित करने की यात्रा है। प्रसाद ने प्रतीको मिथकीय भाषा के माध्यम से उस integration of personality की

प्रक्रिया को व्यक्त किया है जिसमें मनुष्य अपने भीतर के विभाजन को समेटकर एकात्मता प्राप्त करता है। यह प्रक्रिया आधुनिक मनोविज्ञान की individuation की धारणा से गहनता से जुड़ी है जहाँ व्यक्ति अपने अचेतन–चेतन को मिलाकर आत्म साक्षात्कार तक पहुँचता है। कामायनी के प्रत्येक प्रसंग में यह मनोवैज्ञानिक यात्रा स्पष्ट दिखाई देती है। जल–प्रलय मनु के भीतर के दमनित अहं का विस्फोट है, श्रद्धा का मिलन भावनात्मक पुनर्जन्म है, और इड़ा का आगमन बौद्धिक पुनर्गठन का प्रतीक लेकिन जब इड़ा के प्रभाव में मनु श्रद्धा से दूर हो जाता है तब वह पुनः मानसिक असंतुलन में गिरता है। यह स्थिति आधुनिक मनुष्य के उस युग का प्रतीक है जो तकनीकी तथा तर्क से तो सम्पन्न है पर भावनात्मक रूप से रिक्त। प्रसाद इस रिक्तता को केवल नैतिक संकट नहीं बल्कि मानसिक बीमारी के रूप में देखते हैं। इस काव्य का सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक आयाम यह है कि प्रसाद ने मनुष्य के भीतर के द्वंद्व को समस्या के रूप में नहीं विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा। मनु का पतन उसकी यात्रा का अंत नहीं अपितु आत्म–जागरण का प्रारंभ है। जब वह श्रद्धा और इड़ा दोनों के माध्यम से स्वयं को पहचानता है तब वह उस psychological integration को प्राप्त करता है जो मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य है। प्रसाद के लिए यह यात्रा बाहरी नही, बल्कि आंतरिक है। वे मानते हैं कि मनुष्य की मुक्ति किसी ईश्वर अथवा बाहरी शक्ति से नहीं बल्कि उसकी आत्म–संवेदना और आत्मज्ञान से संभव है। प्रसाद की यह दृष्टि आधुनिक मनोविज्ञान के मानवीय पक्ष से जुड़ी है। उन्होंने मनुष्य को न तो केवल तर्कशील प्राणी माना न ही केवल भावनात्मक। उनके लिए सच्चा मानव वह है जो अपने दोनों पक्षों को पहचानता है तथा उन्हें सामंजस्य में लाता है। इसीलिए कामायनी किसी एक चरम की वकालत नहीं करती यह न तो पूर्ण भक्ति का ग्रंथ है न पूर्ण बुद्धिवाद का अपितु दोनों के बीच का psychological balance प्रस्तुत करती है। प्रसाद के यहाँ आधुनिक मनोविज्ञान जीवन–दर्शन बन जाता है। वे मनुष्य के भीतर चल रहे इस द्वंद्व को आत्मा की उन्नति के रूप में देखते हैं जो अज्ञान से ज्ञान, संशय से विश्वास तथा अहं से समर्पण की ओर यात्रा करता है। इस प्रकार कामायनी आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से self-realization और integration of personality की यात्रा है। प्रसाद ने फ्रायड की अचेतन की गहराई और युंग के प्रतीकवाद को भारतीय अनुभव की भूमि पर स्थापित किया जहाँ मनुष्य की आत्मा उसकी सबसे बड़ी प्रयोगशाला बन जाती है। यह कृति हमें यह सिखाती है कि आधुनिकता का संकट बाहरी नहीं, भीतर है और उसका समाधान भी भीतर ही है। श्रद्धा और इड़ा के बीच संतुलन ही वह मनोवैज्ञानिक संतुलन है जिसकी खोज आधुनिक मनुष्य आज भी कर रहा है। इसीलिए कामायनी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने समय में थी एक ऐसी कृति जो मानव मन की गहराइयों में उतरकर उसकी आत्मा को समझने की दिशा में सबसे सुंदर काव्यात्मक प्रयोग है।

प्रतीक और मनोविज्ञान का संगम

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' प्रतीक और मनोविज्ञान का ऐसा अद्भुत संगम है जहाँ शब्द अर्थ नहीं बल्कि चेतना के स्तरों की अनुभूति बन जाते हैं। यह काव्य भारतीय दर्शन एवं आधुनिक मनोविज्ञान दोनों के बीच सेतु का कार्य करता है। कामायनी के प्रतीक अलंकार नहीं हैं; वे मानव–मन की गहराइयों से उठे हुए बिंब हैं जो उसकी भावनाओं, स्वप्नों, अंतर्विरोधों को रूप प्रदान करते हैं। प्रसाद ने मिथकीय कथा का उपयोग करते हुए जो भाषा रची है वह फ्रायड (Freud) और युंग (Jung) के सिद्धांतों से गहनता से जुड़ती है खासकर अचेतन मन, स्वप्न प्रतीक एवं archetypes की अवधारणा से। श्रद्धा–इड़ा क्रमशः heart और mind के प्रतीक हैं जो आधुनिक मनोविज्ञान के "anima&animus" सिद्धांत से साम्य रखते हैं। श्रद्धा मनुष्य के भीतर के स्त्री तत्व (anima) करुणा, प्रेम और संवेदना की प्रतीक है, जबकि इड़ा पुरुष तत्व (animus) विवेक, तर्क और कर्म का प्रतिनिधित्व करती है। इन दोनों के माध्यम से प्रसाद ने मानव चेतना के द्वंद्व को संतुलित रूप में प्रस्तुत किया है। कामायनी की प्रतीकात्मक संरचना मनोवैज्ञानिक अर्थों से गहराई से अनुप्राणित है। मनु का बाढ़ में बह जाना प्रलय का प्रतीक नहीं व्यक्ति के भीतर के असंतुलन का संकेत है वह क्षण जब अचेतन मन (unconscious mind) में दबी हुई इच्छाएँ और अपराधबोध (guilt complex) चेतन स्तर पर फूट पड़ते हैं। फ्रायड के अनुसार यह repression की परिणति है जब दबाई गई भावनाएँ किसी आघात अथवा आत्मसंघर्ष के क्षण में विस्फोट कर जाती हैं। मनु का पश्चाताप इसी guilt complex का प्रतीक है। जब प्रसाद आत्म–ग्लानि को नहीं बल्कि उस आधुनिक मनुष्य की मानसिक अवस्था को लिखा है जो अपने ही कर्मों से व्यथित होकर आत्म–संतुलन की तलाश में है। यह स्थिति युंग के "shadow self" से मिलती–जुलती है जहाँ व्यक्ति अपने भीतर छिपे अंधकार का सामना करता है जिससे कि वह पूर्णता प्राप्त कर सके। श्रद्धा का प्रकट होना इस अंधकार में करुणा की पहली किरण के समान है। वह मनु के भीतर की उस भावनात्मक ऊर्जा का रूप है जो विनाश के बाद सृजन की ओर ले जाती है। श्रद्धा का जल मनोवैज्ञानिक रूप से emotional catharsis का प्रतीक है वह प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति अपने भीतर के दर्द को स्वीकार कर शुद्धि प्राप्त करता है। श्रद्धा का प्रेम का आमंत्रण मानसिक मुक्ति का क्षण है जहाँ मनु अपने अपराधबोध से ऊपर उठकर पुनर्जन्म लेता है। यहीं से उसकी self-healing की यात्रा प्रारंभ होती है। इसके बाद इड़ा का प्रवेश मानव के तर्क और विवेक के पुनर्जागरण का प्रतीक बनता है। इड़ा का चरित्र आधुनिक rational awareness का प्रतिनिधि है वह मनुष्य के भीतर के बौद्धिक पक्ष का प्रतीक है जो उसे कर्म और विज्ञान की दिशा में प्रेरित करता है परंतु प्रसाद का दृष्टिकोण एक गहरे मनोवैज्ञानिक संतुलन पर आधारित है जब इड़ा का प्रभाव बढ़ता है, श्रद्धा की संवेदना क्षीण होने लगती है और मनु पुनः असंतुलन में चला जाता है। यह आधुनिक मनुष्य की वही मानसिक स्थिति है जिसे फ्रायड ने 'conflict between id and ego'' और युंग ने 'disintegration of self' कहा है। प्रसाद इस द्वंद्व को जीवन का स्वाभाविक हिस्सा मानते हैं क्योंकि उनके लिए मनुष्य का सच्चा विकास इसी संघर्ष से होकर गुजरता है। प्रकृति के प्रतीक भी कामायनी में मनोवैज्ञानिक अर्थ से जुड़ते हैं। जल, अग्नि, हिम, पर्वत, और बादल ये सभी तत्व व्यक्ति की मानसिक अवस्थाओं के द्योतक हैं। जल मनुष्य की भावनात्मक तरलता का, अग्नि उसकी ऊर्जा और ज्ञान का, हिम उसकी जड़ता और बौद्धिक ठंडक का और पर्वत उसकी आत्म–संयम का प्रतीक है। यह वही प्रक्रिया है जिसे आधुनिक मनोविज्ञान 'psychological integration' कहता है जहाँ दमन और विसर्जन के बाद व्यक्ति अपने भीतर संतुलन प्राप्त करता है। प्रसाद की प्रतीकात्मकता में मिथक एक सार्वभौमिक भाषा का रूप ले लेता है। वे भारतीय मिथकीय प्रतीकों को आधुनिक मनोवैज्ञानिक अर्थों में रूपांतरित करते हैं जिससे कामायनी केवल एक धार्मिक आख्यान नहीं रह जाती, बल्कि आत्मचेतना का ग्रंथ बन जाती है। मनु, श्रद्धा, और इड़ा के माध्यम से प्रसाद ने यह दिखाया कि मनुष्य का सबसे बड़ा युद्ध बाहरी नहीं भीतरी है अपने ही मन के भीतर छिपे विरोधों, इच्छाओं, और मूल्यों के बीच। यही वह आंतरिक युद्ध है जिसे युंग 'process of individuation' कहते हैं जहाँ व्यक्ति अपने अचेतन को स्वीकार कर अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का एकीकरण करता है। इस प्रकार कामायनी में प्रतीक और मनोविज्ञान का संगम एक ऐसी काव्यात्मक रचना रचता है जो भारतीय संवेदना और आधुनिक मनोविश्लेषण दोनों को जोड़ती है। प्रसाद ने यह सिद्ध किया कि कविता केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति मात्र नहीं अपितु चेतना की यात्रा है वह यात्रा जो मनुष्य को अपने भीतर की गहराइयों में उतरने और वहाँ छिपी ज्योति को पहचानने का

साहस देती है। यही इस महाकाव्य की शाश्वत आधुनिकता है कि यह प्रत्येक युग के मनुष्य को उसके भीतर की चेतना से जोड़ती है और यह समझने की प्रेरणा देती है कि जीवन का सच्चा अर्थ बाहरी सफलता में नहीं बल्कि अपने भीतर के अंधकार में प्रकाश खोजने में है।

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' अपने आप में प्रतीक एवं मनोविज्ञान का एक अद्वितीय संगम है जहाँ कविता दर्शन बन जाती है तथा दर्शन जीवन का संवेदनात्मक अनुभव। प्रसाद ने इस महाकाव्य में मिथकीय कथा के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की चेतना, असंतुलन तथा पुनर्संतुलन की यात्रा को रूपक के रूप में प्रस्तुत किया है। मनु का बाढ़ में बह जाना मनुष्य के मानसिक विघटन का प्रतीक है तो श्रद्धा का उद्भव करुणा तथा भावनात्मक पुनर्जन्म का जबकि इड़ा का आगमन विवेक और वैज्ञानिक चेतना का। यह पूरी कथा वस्तुतः उस मानसिक यात्रा का प्रतीक है,जो मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान, अहं से समर्पण एवं संशय से विश्वास की ओर ले जाती है। प्रसाद का संदेश स्पष्ट है आधुनिकता का संकट बाहरी नहीं अपितु आंतरिक है; मनुष्य अपने भीतर की शांति खो चुका है और उसका समाधान भी उसी के भीतर छिपा है। कामायनी के प्रतीक काव्यात्मक मात्र नहीं अपितु आत्मानुशासन, प्रेम और विवेक की दिशा में मार्गदर्शक बन जाते हैं। यह काव्य सिखाता है कि श्रद्धा और इड़ा, भावना तथा तर्क, दोनों के संतुलन में ही जीवन का सौंदर्य और अर्थ निहित है। प्रसाद ने मनुष्य को न केवल सोचने वाला प्राणी माना बल्कि संवेदना और आत्मजागरूकता से संपन्न अस्तित्व के रूप में देखा। इस दृष्टि से वे केवल कवि नहीं मानव–चेतना के गहरे मनोवैज्ञानिक दार्शनिक हैं जो यह विश्वास जगाते हैं कि सत्य की खोज बाहर नहीं भीतर उतरकर ही संभव है। कामायनी इसलिए आज भी हर युग के मनुष्य के लिए आत्म–संतुलन और आत्म–ज्ञान का शाश्वत ग्रंथ बनी हुई है।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, जयशंकर. (1936). कामायनी. लोकभारती प्रकाशन।
2. शर्मा, रामविलास. (1975). जयशंकर प्रसादः काव्य और दर्शन. वाणी प्रकाशन।
3. मिश्र, नामवर सिंह. (1983). आधुनिक हिंदी कविता में प्रतीकवाद. राजकमल प्रकाशन।
4. पांडेय, राजकुमार. (1990). कामायनी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. भारतीय ज्ञानपीठ।
5. युंग, कार्ल गुस्टाव. (1959). दि आर्केटाइप्स ऐंड द कलेक्टिव अनकांशस. प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. सिंह, नगेन्द्र. (1981). प्रसाद के काव्य का दार्शनिक सौंदर्यशास्त्र. राजपाल एंड संस।
7. शुक्ल, रामचन्द्र. (1940). हिंदी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
8. वर्मा, डॉ. गोपाल राय. (1995). जयशंकर प्रसाद और आधुनिक चेतना. साहित्य भवन।
9. चौबे, श्रीकृष्ण. (1988). कामायनी: प्रतीक और अर्थ. लोकभारती प्रकाशन।